ISSN - 2229-3620
APPROVED UGC CARE

SHODH SANCHAR BULLETIN
Vol. 9, Issue 35 July - September 2019
Page Nos. 63-66

AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' : शैक्षिक पक्षों का अध्ययन

❒ डॉ0 अमिता जैन*

शोध सारांश

छायावाद हृदय और बुद्धि का समन्वय–काव्य है। उन्होंने सौन्दर्य की नई व्याख्या प्रस्तुत की और उदार तथा उदात्त को महत्त्व दिया। उसमें उत्सर्ग है, लोक मांगलिक दृष्टि है और है उदात्त सौंदर्य से कुत्सित यथार्थ देखने की क्षमता। छायावाद अपनी स्पष्ट ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में विकसित हुआ और लोकतांत्रिक परिवेश में पल्लवित–पुष्पित। इसमें मानववाद भी है और मानवतावाद भी। वाद जिसमें मानव से सम्बद्ध उसके शौर्य, पराक्रम, बलिदान और अन्यान्य उपलब्धियों का गायन होता है तथा मानववाद जिसमें यथार्थवादी धरातल पर दुर्बलताओं और सीमाओं को भी सहानुभूति एवं सौमनस्य के साथ स्वीकार किया है। मानव को सुंदरतम **''सुन्दर विहग, सुमन सुंदर, मानव तुम सबसे सुंदरतम''** इसलिए माना है कि उसमें शक्ति और सामर्थ्य के साथ सहज दुर्बलताएँ भी हैं। हिमालय ठोस और विशाल है लेकिन साथ ही द्रवणशील और घटने वाला भी। यही तत्त्व उसे प्यारा भी बनाता है। निराला मानवतावादी रचनाकार थे। देश के दलितऔर शोषित जनों के प्रति उनके हृदय में अपार करूणा थी। वे वर्गहीन समाज के आकांक्षी थे। उन्होंने समाज में हाशिए पर रहने वाले लोगों को अपने साहित्य का आधार बनाया और उन्हें अपनी रचनाओं में गौरवपूर्ण स्थान दिया। निराला पूर्णतः मुक्ति के समर्थक थे। चाहे वह देश की मुक्ति हो, मनुष्य की मुक्ति हो या कविता की मुक्ति। अपने रचनाकर्म में उन्होंने साहित्य में युगान्तर उपस्थित किया।

Keywords : शैक्षिक तत्त्व,शिक्षा के सिद्धान्त,शिक्षा के उद्देश्य,अनुशासन,पाठ्यक्रम

प्रस्तावना : छायावाद के कवियों ने अपने–आप को, अपने आस–पास को, अपने समाज और राष्ट्र को, यहाँ तक कि सम्पूर्ण विश्व को सुन्दर ही सुन्दर देखा। छायावाद में असुन्दर कुछ भी नहीं है। इन कवियों को अपना समाज और अपना राष्ट्र इतना प्रिय था कि एक पल को भी इन्हें किसी प्रकार अपना परिवेश अप्रिय नहीं लगा। 'मूर्त से अमूर्त की ओर जाने वाले छायावादी कवियों ने सम्पूर्ण सृष्टि में अपनी भावनाओं का प्रसार पाया। उन्होंने रागात्मक अनुभूतियों की प्रबलता के कारण गीति काव्य का सहारा लिया तथा जनतांत्रिक भावनाओं के कारण मनोविज्ञान के नये भाव और नये रूप वाले इस काव्य ने नये जीवन के मूल्यों की प्रतिष्ठा की और अंततः सत्य का उद्घाटन कर अनुभूतियों को नये रंग में रंग डाला। निराला एक ऐसे क्रान्तिकारी, संघर्षकारी एवं विद्रोही व्यक्तित्व का नाम है, जो हिन्दी साहित्य के अप्रितम एवं अनन्य हैं। परन्तु विद्रोह एवं संघर्ष की यह चेतना ध्वंसात्मक न होकर निर्माण परक है। उनकी व्यक्तिवादिता समष्टि से जुड़कर ही अभिव्यक्त हुई है और उसका इतना अधिक समाजीकरण हो गया है कि कवि की समस्याएं सामान्य जन की समस्याएं बन गई हैं। काव्य में उनका–सा स्पष्टवादी मुखर स्वर विरले ही रचनाकार का होगा। उन्होंने न केवल नए मूल्यों का सर्जन किया, बल्कि अमूल्यों को ध्वस्त भी किया। निराला का मूल्य बोध उनके निजी जीवन से प्रसूत है। रचनाकार की बेहद ईमानदारी उनमें मिलती है। आज ऐसे कवि, लेखक ढूंढना कठिन नहीं जो अपने लेखन में दीन–हीन और उपेक्षित की बात तो बहुत करते हैं, परन्तु निजी जीवन में उनके प्रति किसी प्रकार की संवेदना और सहानुभूति नहीं रखते। उनमें अनुभूति की ईमानदारी नहीं मिलती। निराला ने जिन मानव मूल्यों की अपने काव्य में अभिव्यक्ति की उन्हें अपने निजी जीवन में भी जिया है। वे मुखौटाधारी कवि, लेखकों से बिल्कुल भिन्न हैं, जिनकी कथनी और करनी में आकाश–पाताल के फासले होते हैं। इस प्रकार उनके जीवन एवं लेखन में एक सूत्रता मिलती है, उनका यह कहना–

''जीवन विष विषम लिया,
जनता के हृदय जिया,

बिल्कुल सार्थक एवं सटीक है। वस्तुतः जनता के हृदय जीने का दावा निराला ही कर सकते हैं। अपेक्षित का उन्नयन उनके काव्य का मेरूदण्ड है। छायावादी कवियों में सबसे विलक्षण

*सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग, जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं (नागौर)

प्रतिभा के धनी सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' युगान्तकारी कवि हैं, जिनकी कविता में तत्कालीन समाज में जी रहे मानव (वह स्वयं निराला भी है) की, अन्याय तथा असमानता के प्रति गहरे विद्रोह की एवं विकसित तथा विशम संघर्ष करने की गूँज सुनाई देती है। हिन्दी प्रकृति की रमणीयता, प्रेम की पवित्रता, उदात्तता, राष्ट्रीयता, देशभक्ति, दार्शनिक भूमिका, लोकहित व मानवतावाद का अंकन आदि सभी कुछ निराला के छायावाद सृजन में देखा जा सकता है। प्रमुख काव्यकृतियाँ निम्न हैं– अनामिका, परिमल, तुलसीदास, जूही की कली, राम की शक्तिपूजा, सरोज स्मृति, कुकुरमुक्ता उपन्यास–अप्सरा।

समस्या का औचित्य

सम्पूर्ण भारत वर्श में प्रतिदिन एक न एक ऐसी घटनाओं (वारदातों) को अंजाम दिया जाता है। ऐसी समस्याओं का हल निकालने का प्रत्येक विचारक ने अपने–अपने ढंग से समस्या का समाधान बताना चाहा। किसी ने कड़े कानून की मांग की, तो किसी ने महिलाओं की सुरक्षा बढ़ाने को कहा। कुछ विचारकों ने तो ऐसी टिप्पणी भी कर डाली कि महिलाएँ घर की चार दीवारी में ही शोभा देती हैं। वर्तमान समय की ऐसी घटनाओं के पीछे कारण है शिक्षित होते हुए भी अशिक्षित रहना अर्थात छात्रों द्वारा श्रेश्ठ साहित्य का अध्ययन न करना या अध्ययन कर उसे आत्मसात् नहीं करना। छात्र–छात्राएँ साहित्य केवल परीक्षा परिणाम के लिए पढ़ते हैं। बाल अपराध बहुत कुछ सीमा तक अस्वस्थ वातावरण और प्रतिकूल परिस्थितियों की उपज है। अतः इसकी रोकथाम हेतु ध्यान रखा जाना चाहिए कि ऐसी वातावरणजन्य परिस्थितियों को नियन्त्रित करने की कोशिश की जाए जिनकी प्रतिक्रिया स्वरूप बालक कुसमायोजन के शिकार होकर विद्रोह पर उतारू हो जाते हैं अथवा समाजविरोधी शक्तियों के चंगुल में फंसकर अपराध की दुनिया को अपना लेते हैं। इनके अपराध करने पर इन्हें कठोर सजा या जेल में ठूसने की व्यवस्था की बजाय उनके आचरण में सुधार लाने की प्रक्रिया पर ही ध्यान दिया जाना चाहिए। श्रेष्ठ साहित्य का अध्ययन ही एक ऐसा हथियार है जो इन ज्वलन्त समस्याओं का निराकरण कर सकता है। अतः एक शिक्षक का दायित्व होता है कि वो इन समस्याओं को पहचाने और उनका समाधान ढूँढने का प्रयास करें। शिक्षक विद्यार्थी को शिक्षा देने के साथ–साथ व्यक्तित्व निर्माण के प्रत्येक पहलू पर गहराई से अध्ययन कर उसे परिमार्जित कर पायेंगे। ताकि वर्तमान समाज की शैक्षिक समस्याओं का समाधान सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' के दृश्टिकोण के अनुसार किया जा सके।

उद्देश्य :

1. छायावाद के प्रमुख कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन करना।
2. प्रतिकूल परिस्थितियों में भी समस्याओं का समाधान ढूँढ़ने का प्रयास करना।
3. उनके शैक्षिक तत्त्वों का पता लगाना।
4. समाज के प्रति समीक्षात्मक समझ विकसित करना।

शोध विधि :

शोध एक उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है। किसी शोधकार्य को पूर्ण करने का उद्देश्य शोधार्थी द्वारा स्वयंचयनित समस्या का समाधान ढूँढना है। वर्तमान समय में शिक्षा तथा अन्य सामाजिक विषयों में अनेक शोध विधियों का प्रयोग किया जा रहा है। जिनमें– सर्वेक्षण विधि, ऐतिहासिक विधि, प्रयोगात्मक विधि, दार्शनिक विधि, क्रियात्मक अनुसंधान विधि, व्यक्ति इतिहास विधि, घटनोत्तर विधि, आनुवांशिक विधि तथा प्रजातांत्रिक विधि इत्यादि प्रमुख हैं। प्रस्तुत शोध कार्य में ऐतिहासिक विधि तथा विषय–वस्तु विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया है। ऐतिहासिक अनुसंधान विधि में अतीत की घटनाओं, विकासक्रमों तथा विगत अनुभूतियों का तर्क संगत अन्वेषण है। इससे अतीत की सूचनाओं तथा सूचना सूत्रों के सम्बन्ध में प्रमाणों की वैद्यता का सावधानीपूर्वक परीक्षण किया जाता है और परीक्षण में किये गये प्रमाणों की सावधानीपूर्वक व्याख्या की जाती है। विषय–वस्तु विश्लेषण विधि दार्शनिक विधि की प्रविधि है। इसमें दो प्रकार के अध्ययन प्रयुक्त किये जाते हैं। 1. विचार प्रणाली का विश्लेषण 2. किसी महान विचारक के दर्शन का आलोचनात्मक विवेचन। इसके अन्तर्गत किसी विशिष्ट दार्शनिक प्रणाली के विभिन्न पक्षों का विवेचन किया जाता है। उनका व्यवहारिक पक्ष वर्तमान में किस प्रकार प्रासंगिक हो सकता है? इसमें अपनी सूझ–बूझ से उपलब्ध साहित्य में तथ्यों का विश्लेषण करता है और उन्हें क्रमबद्ध रूप से व्यवस्थित करके विवेचन करता है। वह उन तथ्यों का विवेचन अपने दृष्टिकोण से करता है, जो तथ्य बौद्धिक चिन्तन के लिए आधार मात्र होते हैं। इस प्रकार दार्शनिक शोध में विषय–वस्तु विश्लेषण प्रमुख शोध प्रविधि है। ऐतिहासिक तथा पाठ्य–पुस्तक विश्लेषण दोनों ही विधियों में प्राथमिक तथा द्वितीयक स्रोतों से तथ्यों का संकलन किया जाता है। तत्पश्चात् उनका विश्लेषण एवं संश्लेषण कर निष्कर्षों का प्रतिपादन किया जाता है।

साहित्य समीक्षा :

शर्मा, निधि, 2014 : 'मध्यकालीन कवियों द्वारा प्रतिपादित शैक्षिक मूल्यों का आधुनिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन' करने पर शोध से निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए कि कबीर की रचनाओं में विभिन्न शैक्षिक मूल्यों का प्रतिपादन किया गया। जैसे– मैत्री भावना, परिश्रम की महत्ता, गुरु के प्रति श्रद्धा, मृदुभाषित, मानव प्रेम, सर्वधर्म, समभाव आदि। तुलसीदासजी की रचनाओं में अनेक शैक्षिक मूल्यों का उल्लेख किया गया। जैसे– मातृ–पितृ आज्ञापालन, गुरु के प्रति श्रद्धा, अनुशासन, सहयोग, मातृत्व, मैत्री, प्रेम, राष्ट्रीयता, नारी सम्मान, कर्त्तव्यनिष्ठा आदि। कबीरदास तथा तुलसीदास की रचनाओं में प्रतिपादित मूल्यों का तात्कालीन परिस्थिति में ही नहीं वर्तमान में भी प्रासंगिकता है। **आर, जोशी**

सरिता, 2014 : ''निराला का कथा साहित्य : मानवतावादी दृष्टि का अनुशीलन', निराला के कथा साहित्य में मानवतावादी दृष्टि का अध्ययन करते हुए मुझे यह अनुभव हुआ कि जिस प्रकार कवित् प्रतिभा ईश्वर प्रदत्त होती है वैसे ही मानवता का वह भाव जो साहित्य–सर्जन का मुख्य आधार बन जाए वह भी शायद ईश्वर–प्रदत्त होगा, क्योंकि मानवता के अहसास को अनुभूत करने की, दुःखी के दुःख को महसूस करने की जो अद्भुत क्षमता थी वह बहुत कम लोगों में पाई जाती है। उनके जीवन की एक–एक घटना और अनुभूति को उनकी प्रकृति, उनकी सोच, व्यवहार, संघर्ष, विद्रोह, प्रेम, सहानुभूति, सौहार्द्र, भाईचारा, करूणा जैसे भावों को ही जिसने अपना जीवन बना लिया। उनका कथा साहित्य भी उनके व्यक्तित्व, जीवन और उनकी वैचारिकता को ही प्रतिबिम्बित करता है। **कुमार अनूप, 2006** : 'रवीन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक चिंतन की आधुनिकता',का अध्ययन' करने पर उनकी रचनाओं का वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में उपादेयता को स्पष्ट किया गया है। रवीन्द्रनाथ टैगोर विद्यालयी शिक्षा की सार्थकता उसके सामाजिक स्वरूप में मानते थे। शिक्षा का व्यवहारिक शिक्षा में तालमेल को आवश्यक माना है। मातृ भाषा में शिक्षा देने पर जोर दिया हैं। **नन्द, विजय : 1992**, 'डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के शैक्षिक विचारों की आधुनिक भारत में प्रासंगिकता' में बताया है– डॉ. राजेद्र प्रसाद के शैक्षिक विचारों का अध्ययन करना तथा उनके शैक्षिक विचारों की आधुनिक भारत में प्रासंगिकता की तलाश करना। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष हैं– स्वस्थ राष्ट्रीयकरण और युवाओं की तैयारी आवश्यक है। स्वतंत्रता और देश सेवा के लिए शिक्षा के सामान्य और विशेष स्तर की शिक्षा पद्धति के सुधार को प्रतिबिम्बित करना। **शर्मा, विवेक : 2004**, ''जयशंकर प्रसाद के उपन्यासों में शैक्षिक निहितार्थ का अध्ययन।'' प्रसाद ने अपने उपन्यासों तितली, कंकाल आदि के माध्यम से तत्कालीन सामाजिक परिवेश का चित्रण पेश किया है। नैतिकता, सामाजिक उत्थान, सांस्कृतिक जागरूकता आदि से ओत–प्रोत शैक्षिक मूल्यों की पुनर्स्थापना पर जोर दिया।

शैक्षिक तत्त्वों का अध्ययन :

1. **शिक्षा के सिद्धान्त :**

शिक्षा विकसित राष्ट्र की एक अनिवार्य आवश्यकता है। हमारा शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण एवं विवेचन व्यापक और विस्तृत रखने की आवश्यकता है। लिखने और सिखाने के लिए बहुत कुछ किया जा रहा है। इसमें बहुआयामों का अभाव है, जिसके कारण बालकों का सर्वांगीण विकास नहीं हो पा रहा है। अतः शिक्षा के मूलभूत सिद्धान्त हैं–**ज्ञान व्यक्ति के भीतर होता है, शिक्षा भावी जीवन की तैयारी तथा मोक्ष प्राप्ति का साधन हो, शिक्षा बालक को यांत्रिक नहीं मनुष्य बनाएं, संस्कारों की शिक्षा, स्वाध्याय का सिद्धान्त** आदि।

2 **शिक्षा के उद्देश्य :**

शिक्षा विकसित राष्ट्र की एक अनिवार्य आवश्यकता है। लिखने और सिखाने के लिए बहुत कुछ किया जा रहा है। छात्रों और अध्यापकों की विशाल जनसंख्या इसी शिक्षा प्रयोग में लगी हुई है। शिक्षा नीति पर लम्बी–चौड़ी चर्चाएं हो रही हैं, रिपोर्टें तैयार हो रही हैं, परन्तु क्या सीखा जाए और क्या सिखाया जाए\ इसका निर्धारण करना कठिन कार्य होता है। अतः महान् शिक्षाविदों, दार्शनिकों, साहित्यकारों एवं समाज सुधारकों के विचारों को जानना कि उन्होंने शिक्षा सम्बन्धी कौन–कौन से उद्देश्य बताएं हैं \ इसी क्रम में महान् साहित्यकार सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'के साहित्य में शिक्षा के उद्देश्य सम्बन्धी विचार इस प्रकार हैं–**स्वयं से स्वयं की पहचान करना, अपनी अन्तर्निहित क्षमताओं को उजागर करना,छात्र में राष्ट्रीयता के साथ–साथ विश्व बन्धुत्व की भावना का विकास करना, शिक्षा बालक को आनन्द प्रदान करने वाली हो, पशुवृत्तियों का संयमन और प्रतिभाओं का सृजन**आदि।

3 **अनुशासन का स्वरूप :**

किसी भी समर्थ राष्ट्र की सबसे बड़ी पूंजी उसके अनुशासित युवक होते हैं। अनुशासित युवा पीढ़ी से ही देश के भावी नागरिकों का निर्माण होता है। अनुशासित नागरिकों में वे सभी मानवीय गुण विद्यमान होते हैं, जो एक राष्ट्र को सुदृढ़ता, सम्पन्नता, सम्प्रभुता और श्रेष्ठता प्रदान करते हैं। ऐसे अनुशासित नागरिकों का निर्माण करने वाली संस्था है–विद्यालय। विद्यार्थी जीवन में अनुशासन का बहुत महत्व है बिना अनुशासन के विद्यार्थी अपनी अन्तर्निहित शक्तियों का उचित विकास व प्रयोग नहीं कर सकता। विद्यार्थियों में आत्म–अनुशासन का गुण विकसित करने के लिए अनुशासनहीनता पैदा करने वाले कारणों का पता लगाकर उनका निदान छायावादियों के महान् साहित्य में ढूंढा जा सकता है। अनुशासनसम्बन्धी विचार इस प्रकार हैं– **अनुशासन स्थापित करने में शिक्षक की भूमिका, प्रकृति के प्रति संवेदनशील होना, मानव की चित्त वृत्तियों का परिशोधन, शिक्षा जीवन मूल्यों पर आधारित हो, गुरू–शिष्य सम्बन्ध संवदेनशील** आदि।

4 **पाठ्यक्रम का स्वरूप :**

विद्यालय में हिन्दी विषय के पाठ्यक्रम में क्या परिवर्तन किया जा सकता है या पाठ्यक्रम निर्माण के क्या–क्या आधार हो जिससे विद्यार्थी का साहित्य की तरफ रूझान हो। जब तक बालक में साहित्य के प्रति स्वअध्ययन की आदत नहीं पड़ेगी, उसे साहित्य के अध्ययन में रस नहीं आएगा और जब किसी विषय को पढ़कर अन्दर से आनन्दित नहीं होते तो उस विषय से बालक जो ज्ञान प्राप्त कर सकता है वह सम्भवतः नहीं कर पायेगा अर्थात् उसकी चित–वृत्तियों में साहित्य से जो संशोधन होना चाहिए वह सम्भव नहीं है। पाठ्यक्रम में व्यावहारिक विषयों की महत्ता एवं व्यापकता पर भी बल दिया जाना चाहिए। स्वरूचि के अनुसार

बालक को शिल्प आधारित विषयों के चयन की स्वतन्त्रता उसके स्वाभाविक विकास को प्रोत्साहन देनेमें महत्त्वपूर्ण है। पाठ्यक्रम सम्बन्धी विचार इस प्रकार हैं– **पाठों का स्तर विद्यार्थियों की उम्र और आवश्यकता के अनुकूल होना चाहिए, पाठेत्तर साहित्यिक सामग्रियों का प्रयोग, श्रेष्ठ मानव मूल्यों पर आधारित पाठ्यक्रम होना चाहिए** आदि।

शैक्षिक निहितार्थ :

1 विद्यार्थियों में अतिमहत्त्वाकांक्षा, प्रतियोगिता, प्रतिस्पर्द्धा को बढ़ाने वाली शिक्षा नहीं देनी चाहिए। शिक्षा को प्रतिस्पर्द्धा के केन्द्र से हटा कर आत्म परिष्कार एवं स्वयं के सहज विकास पर बल देने वाली होनी चाहिए।

2 शिक्षक बालक को इस प्रकार शिक्षित करें कि वह शिक्षा उसको भावी जीवन की तैयारी तथा मोक्ष प्राप्ति का साधन प्राप्त कराने वाली हो।

3 शिक्षा इस प्रकार दें कि बालक एक यान्त्रिक मशीन न बनें बल्कि उसमें प्रेम, करूणा, शान्ति जैसे भावों को भरकर श्रेष्ठ मनुष्य बना सकें।

4 ज्ञान, इच्छा और क्रिया शिक्षक में इन तीनों आयामों के समायोजन का अच्छा गुण होगा तभी वह बालक की प्रवृत्तियों में बदलाव ला पायेगा।

5 शिक्षा की व्यवस्था जहां तक सम्भव हो प्राकृतिक परिवेश में ही हो। क्योंकि प्रकृति बालक को संवेदनशील बनाती है।

6 शिक्षक का कर्त्तव्य है कि वह बालक की चित्त वृत्तियों का परिशोधन कर उसे कुमार्ग से सुमार्ग पर लाए। अनुशासन का यह सबसे श्रेष्ठ तरीका है।

7 शिक्षा जीवन मूल्यों पर आधारित हो।

8 पाठ्यक्रम में व्यवहारिक विषयों पर अधिक जोर देना चाहिए।

9 शिक्षा व्यवस्था बालक को आनन्द प्रदान करने वाली होनी चाहिए।

10 बालक की संवेगात्मक शक्ति का मार्गान्तीकरण और शोधन होना चाहिए।

उपसंहार :

साहित्यकार एवं शिक्षक दोनों ही युग–निर्माता होते हैं। साहित्कार अपनी लेखनी से आदर्श समाज के नवनिर्माण में योगदान देता है, तो शिक्षक अपने शिक्षण दायित्त्व के निर्वाह द्वारा कुंभकार की भांति भावी पीढ़ी को गढ़ता है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए बच्चों के अधिकार को ध्यान में रखते हुए ऐसे शिक्षकों की आवश्यकता अनुभूत की जाती है। जिनमें समाज और दुनिया के प्रति समीक्षात्मक समझ हो तथा जो मौजूदा शिक्षायी जड़ता का सामना कर सके और उचित व्यावहारिक विकल्पों की खोज कर सके। सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला हिन्दी कविता के छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक हैं। निराला सार्वभौम प्रतिभा के शुभ्र पुरुष थे।

सन्दर्भ :–

❖ चतुर्वेदी रामस्वरूप, 2005, हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ संख्या–14

❖ भारती धर्मवीर, 1999, मानव मूल्य और साहित्य, भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–24–25

❖ शर्मा, आचार्य श्रीराम,1998 शिक्षा एवं विद्या, द्वितीय संस्कण शांति कुंज, हरिद्वार, पृष्ठ संख्या–35

❖ कुमार सन्तोश 1998 निराला की आधुनिकता मनस्सार्थकता, आधुनिकता प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–22

✠ शर्मा, सुरेन्द्र, 1996, भारतीय जीवन मूल्य, पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी, पृष्ठ संख्या–38

✠ मिश्र रमेश दत्त 1994 'निराला काव्य में मानवीय चेतना' के. एल पचौरी प्रकाशन दिल्ली, पृष्ठ संख्या–50

✠ 'निराला' सूर्यकान्त त्रिपाठी, 1992 'अपरा' राजकमल प्रकाशन, कोलकाता, पृष्ठ संख्या–63

✠ त्रिवेदी देवेन्द्र नाथ, 1992, 'निराला काव्य में मानव मूल्य और दर्शन, सुलभ प्रकाशन, लखनऊ, पृष्ठ संख्या–31

✠ शर्मा रामविलास 1990 'निराला की साहित्य साधना' राज कमल प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–62

✠ सिंह,नामवर, आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ संख्या–54

✠ निराला,सूर्यकान्त त्रिपाठी, 'नया साहित्य, दिल्ली, पृष्ठ संख्या–44–46

❒❒❒